

## tulis Pratina

## (A UGC-recognized CARE Listed

 Quarterly Research Journal of JVBI)Year-46 • Vol. 183-184 • Issue: July-December, 2019


## JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

A University dedicated to Oriental Studies \& Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

# Tulsī Prajñā 

(AUGC-recognized CARE Listed Quarterly Research Journal of JVBI)

Patron<br>Prof. Bachhraj Dugar<br>(Vice-Chancellor)

Editor<br>Dr. Samani Bhaskar Pragya<br>Dr. Samani Amal Pragya<br>Dr. Samani Samyaktva Pragya

Managing Editor<br>Mohan Siyol

Publisher<br>Jain Vishva Bharati Institute<br>Ladnun 341306 (Raj.) India<br>Contact us: tulsiprajnarj@gmail.com<br>9887111345

## Editorial and Advisory Board

Prof. Kuldip Chand Agnihotri<br>Vice-Chancellor<br>Central University of Himachal Pradesh<br>Dharamshala, Dist. Kangra, Himachal Pradesh-176215

Prof. M.R. Gelra<br>Founder Vice-Chancellor and Emeritus Professor<br>Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)<br>Ladnun-341306, Rajasthan

Prof. Naresh Dadhich<br>Former Vice Chancellor<br>Vardhaman Mahaveer Open University, Kota, Rajasthan

Prof. R.S. Yadav<br>Former Dean, Faculty of Social Sciences<br>Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana<br>Prof. S.R. Vyas<br>Former HOD, Dept. of Philosophy, MLSU, Udaipur<br>Former Member Secretary, ICPR, HRD Ministry, GOI, New Delhi

Prof. Dayanand Bhargava<br>Emeritus Professor, JVBI, Ladnun<br>Former Chairman, Veda-Vijnana,<br>J.R. Rajasthan Sanskrit Univesity, Jaipur

Prof. Arun Kumar Mukerjee

Former Professor, Dept. of Western Philosophy
Jadavpur University, Kolkata (W.B.)

## Tulsī Prajñā

## Contents

Āgama
Ācārya Mahāprajña ..... 5
Articles
Jaina Anekāntavāda: Philosophy of Inter-Faith Polylogue ..... 21
Prof. Arun K Mookerjee
Phonology in Hemacandra's Prakrit Grammar ..... 34
Prof. Jagat Ram Bhattacharyya
The Conceptual Analysis of Philosophy of Co-existence ..... 45
Dr. Samani Shashi Prajñā
उत्तराध्ययनसूत्र और श्रीमद् भगवद्गीता में कर्त्तव्याकर्त्तव्य बोध ..... 60
साध्वी निवेदिता (गरिमा जैन)
डॉ प्रद्युम्न शाह सिंह
योगोपनिषदों में वर्णित मुद्राओं के स्वरूप की विवेचना ..... 69
डॉ. शाम गणपत तिखे
जयराम कुशवाहा
महाभारत के अनुसार धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष : पुरुषार्थ मूल्य-व्यवस्था एवं ..... 77
जीवनदर्शन पर विचार
डॉ सुशिम दुबे
Units of Length in Jaina Canons ..... 84
N.L. Jain

# Jaina Anekāntavāda: 

Prof. Arun K Mookerjee*


#### Abstract

It is said that every object designated by a word (sign) has inherently a quality (Dharma)with its opposite quality. This comes under the general rule of Jaina Philosophy as anekāntavāda that agreement and difference are meaningfully coexistent facts. Anek $\bar{a} n t a v a \bar{a} d a$ is the philosophy and polylogue the method of Inter-faith deliberation. This is the keynote to understand a religion by comparable similarities and differences. But to make it's understandable to other persons \& religion we need to open a polylogue at time with others. The greatest advantage of a polylogue is that it creates a material condition for mutual discussion on the similarities and differenes. The proposal of the present paper is anekāntavāda as a philosophy of (inter-faith) polylogue.


## Key words

Vedānga, Sīksa, Kalpa (sūtragrantha, religious rituals of Brāhmaṇaliterature),Chanda,Jyotirvidyā,Nirukta (philology, Lexicon)

[^0]
# Phonology in <br> Grammar 

Prof. Jagat Ram Bhattacharyya*


#### Abstract

The Prakrit grammar of Hemacandra (Siddha-hema-śabdānuśāsana) has very distinct place in linguistic studies. Like the Astādhyaȳ̄ of Pānini, the grammar of Hemacandra is also classified in eight adhyāyas (chapters). First seven chapters are dedicated to Sanskrit grammar and again each chapter is divided into fourquarters. The eighth or the last chapter is written on Prakrit and Hemacandra makes sūtras and auto-commentary on these. By a lingusitic study of Hemacandra's Prakrit grammar it is clear to us that the first two pādas are for phonology, again in which the first one is dealt with vowels as well as single consonants and the second chapter is written for conjunct consonants, indeclinablesetc. Like wise the dictums in the third chapter are based on declension and conjugation and the fourth chapter comprises with much varieties, such as dhātvādeśa, the characteristic features of the dialects, such as, Śaurasenī, Māgadhī, Paiśācī, Cūlikā Paiśācī and finally the Apabhraṃśa is dealt. Hemacandra arranged all the sūtras in his grammar very systematically. In this paper, it is intended to deal with some of the sūtras which are very important to be discussed linguistically.


## Key words

Siddha-hema-śabdānuśāsana,Sandhi, Accent, Prakrit

[^1]
# The Conceptual Analysis of Philosophy of Co-existence 

## Tulsī Prajñā

46 (183-184)
ISSN : 0974-8857

Dr. Samani Shashi Prajñā*


#### Abstract

The co-existence of opposing pairs can be seen in each and every entity all over the world. The doctrine of Anekānta was newly nomenclatured by Acharya Mahāprajña (1990-2019) as the philosophy of Co-existence. I pondered upon the world of affairs, found series of pairs in every individual object of knowledge and came with the conclusion that the very essence of any substance is in its own the other. Everything is in pairs. The existence of co-opposites is a self-proven axiom. It is very nature of the object to possess the co-opposites simultaneously. It is proved that the co-opposites do not cancel each other but reinforce each other. So an humble endeavour is made to highlight the binary non-opposing attributes of the entity as found in the anekāntic conversation between the Mahāvirra and the Gautam and with many more disciples in canonical literature. Along with that even in the scientific world of experiments, in western logical world, in our parts of the body and in the world of experience also the philosophy of coexistence seems to be functional.


## Key words

Anekānta (Multi-dimensional Perspective), Syādvāda (Linguistic Expression of Anekāntic Truth), Reality (Substance), Naya (Acceptance of one standpointwithout negating the other standpoints)

[^2]
# उत्तराध्ययनसूत्र और श्रीमद् <br> भगवद्गीता में कर्त्तव्याकर्त्तव्य बोध 

साध्वी निवेदिता (गरिमा जैन)*<br>डॉ प्रद्युम्न शाह सिंह**

## सार-संक्षेप

उत्तराध्ययनसूत्र भगवान महावीर की अन्तिम देशना है और श्रीमद्भगवद्गीता श्री कृष्ण का संदेश है। दोनों शास्त्रों में दो भिन्न-भिन्न महापुरुषों की वाणी है। भगवान महावीर और श्रीकृष्ण दोनों ने उपदेश के माध्यम से जन जन को शाश्वत संदेश दिया है। उत्तराध्ययनसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता -दोनों ही ग्रन्थ, कर्त्तव्याकर्त्तव्य अर्थात् साधक के लिए क्या करणीय है और क्या अकरणीय है, इसका बोध करवाते हैं। दोनों ही ग्रन्थ कर्म प्रधान ग्रन्थ हैं। दोनों ग्रन्थों में प्रवृत्ति और निवृत्ति इन दोनों मार्गों पर चलने वाले व्यक्तियों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य के बारे में बोध कराया गया है। जहाँ उत्तराध्ययनसूत्र में गृहस्थ और साधु दोनों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य का अवबोध कराया गया है, वहीं श्रीमद्भगवद्गीता में भी मानव जीवन में करणीय-अकरणीय बातों का ज्ञान प्राप्त होता है। अतः श्रीमद्भगवद्गीता हिंसा का उपदेश देने वाला ग्रन्थ नहीं है अपितु जीवन के दायित्व का कैसे निर्वहन किया जाए, उसके महत्त्व को प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ है। उत्तराध्ययनसूत्र की भी यह विशेषता है कि इसमें श्रमण और श्रावक को कैसा जीवन जीना चाहिए, उसका मार्ग बताया गया है। केवल कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ही बोध ही नहीं अपितु सामाजिक जीवन में कैसे जीना चाहिए, समाज कैसा होना चाहिए आदि सामाजिकता के सूत्र भी उत्तराध्ययनसूत्र में देखने को मिलते हैं। उत्तराध्ययनसूत्र श्रमण परम्परा का प्रतिनिधित्व कर रहा है और श्रीमद्भगवद्गीता वैदिक परम्परा का प्रतिनिधित्व कर रही है। दोनों ही जीवन जीने की कला सिखाने वाले, दायित्वों का बोध कराने वाले ग्रन्थ हैं। इनके आधार पर मनुष्य स्व और पर दोनों का कल्याण कर सकता है।
मुख्य शब्द- उत्तराध्ययनसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता

[^3]
# योगोपनिषदों में वर्णित मुद्राओं <br> के स्वरूप की विवेचना 

डॉ. शाम गणपत तिखे*
जयराम कुशवाहा**

## सारांशिका

योगोपनिषदों में ज्ञान और योग दोनों की महत्ता बताते हुए कहा गया है कि मानवीय जीवन में आध्यात्मिक उपलब्धि प्राप्त करने हेतु ज्ञान व योग दोनों ही आवश्यक है। ज्ञान के माध्यम से मनुष्य अविद्या का नाश कर लेता है और योग के द्वारा उस ज्ञान का व्यवहार में प्रयोग करता है। केवल ज्ञान या केवल योग अविद्या को समूल नष्ट नहीं कर सकता है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए ज्ञान व योग दोनों ही आवश्यक माने गए हैं। जब तक शास्त्रों द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान व्यावाहारिक जीवन में प्रयोग नहीं किया जाता है, तब तक वह मुक्ति प्रदान में सहायक नहीं बन सकता है। इसीलिए योग-विज्ञान के माध्यम से उस प्राप्त ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में उपयोग करके व्यक्ति स्वयं का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास कर सकता है। योगोपनिषदों में समाहित ज्ञान व योग का व्यावहारिक स्वरूप भी मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी माना गया है। योगोपनिषदों में योगांगों के ही अंतर्गत यौगिकमुद्राओं के व्यावहारिक स्वरूप का भी वर्णन प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोधलेख के अंतर्गत योगोपनिषदों में वर्णित मुद्राओं के स्वरूप का हठयोग ग्रन्थों में वर्णित मुद्राओं के सापेक्ष में अध्ययन करते हुए दोनों में वर्णित मुद्राओं की समानता, विभिन्नता और विशेषताओं का विवेचनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : योगोपनिषद्, मुद्रा, खेचरी, हठयोग

[^4]
## महाभारत के अनुसार धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष : पुरुषार्थ मूल्य व्यवस्था एवं जीवनदर्शन पर विचार

डॉ सुशिम दुबे*

## सारांशिका

भारतीय परम्परा में धर्म, अर्थ, काम के रूप में त्रिवर्ग तथा मोक्ष को साथ मिलाकर चतुर्वर्ग की अवधारणा पायी जाती है। इन्हें ही चार पुरुषार्थ या पुरुषार्थ-चतुष्टय भी कहा जाता है। 'पुरुषार्थ' की अवधारणा प्राचीन भारतीय मनीषियों के द्वारा आदर्श रूप में स्वीकार्य जीवन व्यवस्थापन तथा जीवनदर्शन की रूपरेखा को प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत आलेख में महाभारत में धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष परक विचार के सन्दर्भ में पुरुषार्थ की अवधारणा का वर्णन एवं विश्लेषण किया गया है साथ ही, पुरुषार्थ व्यवस्था में मूल्यों के क्रम, उनके अतिक्रम, एवं मूल्य व्यवस्था में उनके वैशिष्ट्य को महाभारत के मूल संस्कृत उद्धरणों के साथ देने का प्रयास किया है। इस प्रयास में यह आशा समन्वित है कि विशालतम महाकाव्य महाभारत के माध्यम से चिरन्तन प्रवाहमान भारतीय संस्कृति की पुरुषार्थपरक मूल्य व्यवस्था युवापीढ़ी को विश्व के भारतीय मूल्यव्यवस्था के प्रति आकर्षित करेगी।

मुख्य शब्द —पुरुषार्थ, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

[^5]
# Units of Length in Jaina Canons 

N.L. Jain*

## Introduction

The Jaina Canons contain large amount of descriptions about the physical phenomena in the world beside the main spiritual processes and discussions. Their knowledge is sensory in the first instance which is analyzed by mind to give proper form and explanations. Barring supersensory knowledge, all other forms are primarily relative and qualitative. Their accuracy and absolutism is possible only through measurements. These give reliability and credibility to the descriptions. The Jaina scholars knew this fact that is why they have written general and special treatises in this direction. The accuracy of the descriptions contained in them depends upon the standard units used.

There have been three main areas of measurements since the earliest times: mass or volume, length, distance or area and time. In contrast, the International Congress on Weights and Measures, 1971 have accepted seven areas under this category-mass, distance, time, electric current, heat, light and matter. ${ }^{1}$ It could be surmised that the last four categories could not develop in olden times. The author has pointed out earlier about the varieties in names, stages and values of time units described in jaina canons of various ages. ${ }^{2}$ This does not make it possible to evaluate and compare the accurate meanings for the descriptions based on them. It was, therefore, suggested that there must be uniformity of names, stages and equivalent values in current units for the canonical time measures. Likewise, length units also require evaluative consideration.

[^6]
## Tulsī Prajñā Research Journal (TPRJ) Guideline for Writers

1. It is policy decision for TPRJ that editors reserve the right to make final alterations in the text, on linguistic and stylish grounds, so that entry conforms to the uniform standard required for the journal.
2. Only Original, Authentic, Useful, Unpublished articles/papers will be accepted. The article once published in TPRJ cannot be published elsewhere without permission means the Copy right of the article published in the TPRJ shall remain vested with the journal.
3. Two Type script copies of the Manuscript along with Soft copy (Word File) in CD or email has to be submitted on appropriate addresses.
4. Writers are expected to provide short resume including contact details: postal address, email ID and Contact Numbers. (Format is provided on previous page)
5. The paper can be sent to authors again for upgrading it on basis of comments from experts.
6. The following are instructions for preparing the script:

- Format of Article: Abstract (not more than 200 words), Key Words, Introduction, Problem, Research Methodology if any, Main Content, Research Design if any, Findings, Conclusion, Reference, Bibliography.
- Font Type: Times New Roman /Krutidev010 respectively for English/Hindi.
- Font Size: English 14/12/10 respectively for Heading/Main body/Reference. Hindi 16/14/12 respectively for Heading/ Main body/Reference.
- Spacing : One and half for lines and double for Paragraph
- Words: 4000-6000 words i.e. 10-15 Typed A4 Size Papers
- Reference Type: MLA ( 8th edition)

Link up for more help: http://www.easybib.com/guides/citation-guides/mla-8/ for examples: for journals and books respectively

Kincaid, Jamaica. "In History." Callaloo, vol. 24, no. 2, Spring 2001, pp. 620-26.
Jacobs, Alan. The Pleasures of Reading in an Age of Distraction. Oxford UP, 2011.

- Reference Style : End note
- Alignment: Justify
- Quotation: verbatim et literatim (exact) with original: three dots to indicate ellipsis: in double inverted commas.
- For the Manuscript prepared in English, The Words and /or citations from Sanskrit or any language other than English have to be in Roman Script, fully italicize and with standard diacritical marks.


# जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ प्रकाशन सूची 

| क्र. | पुस्तक का नाम | लेखक/सम्पादक | मूल्य |
| :---: | :---: | :---: | :---: |
| 01. | आवश्यक निर्युक्ति खण्ड-1 | डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा | 400 |
| 02. | जैव प्रबोधन : जैन दृष्टि | प्रो. बच्छराज दूगड़ | 140 |
| 03. | भिक्षुन्यायकर्णिका | पं. विश्वनाथमिश्र | 120 |
| 04. | जैन पारिभाषिक शब्दकोश | मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा | 995 |
| ( वा.प्र.आचार्य तुलसी, मु.सं.आचार्य महाश्रमण ) |  |  |  |
| 05. | जैन न्याय पारिभाषिक कोश | प्रो. दामोदर शास्त्री | 500 |
| 06. | जैन आगमों का सामान्य ज्ञान | प्रो. महावीर राज गेलड़ा | 300 |
| 07. | जैन संस्कृति और जीवन मूल्य | डॉ. समणी ऋजुप्रज्ञा | 100 |
| 08. | व्यक्तित्व विकास और योग | डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा | 110 |
| 09. | शिक्षा दर्शन एवं मूल्य विकास | डॉ. समणी मल्लि प्रज्ञा/डॉ. हेमलता जोशी | 160 |
| 10. | दुष्टांत कोष | प्रो. दामोदर शास्त्री | 375 |
| 11. | जैनधार्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम | डॉ. सागरमल जैन | 700 |
| 12. | जैन आगम ग्रंशों में पंचमतवाद | डॉ. वन्दना मेहता | 220 |
| 13. | पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रजेन प्रणीता जैनन्यायपंचाशती | पं. विश्वनाथ मिश्र | 100 |
| 14. | अपभ्रंश साहित्य का इतिहास | प्रो. प्रेम सुमन जैन | 950 |
| 15. | जैन न्याय को आचार्य प्रभाचन्दू का योगदान | डॉ. योगेश कुमार जैन | 500 |
| 16. | महात्मा गांधी का चिंतन और समसामयिक विश्व | डॉ. जुगल किशोर दाधीच | 160 |
| 17. | प्राकृत भाषा प्रबोधिनी | डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा | 120 |
| 18. | आचार्यश्री महाप्र्जकृत तुलसीमंजरी ( पूर्वाद्द एवं उत्तरार्द्ध ) | डॉ. साध्वी अक्षयप्रभा | 895 |
| 19. | भगवती आराधना ( मूलाराधना) | डॉ. दलपतसिंह बाया | 1995 |
| 20. | Jain Biology | Late Shri Jetha Lal S. Zaveri/Prof. Muni Mahendra Kumar | 200 |
| 21. | Samayasara | Late Shri Jetha Lal S. Zaveri / Prof. Muni Mahendra Kumar | 450 |
| 22. | Jain Paribhasika Sabdakosa (English) | Prof. Muni Mahendra Kumar | 1125 |
| 23. | Science in Jainism | Prof. M.R. Gelra | 200 |
| 24. | Bhagavai-2 | Acharya Mahaprajna, Eng. trans. by | 1695 |
|  |  | Prof. Muni Mahendra, Kumar \& Late Dr. Nathmal Tatia |  |
| 25. | Jain Theory of Knowledge and Cognitive Science (An Interdisciplinary Approach) | Dr. Samani Chaitya Prajna | 250 |
| 26. | Non-violence Relative Economics and A New Social Order | Prof. B.R. Dugar/Dr. Satya Prajna/Dr. Samani Ritu Prajna | 500 |
| 27. | Studies in Jaina Agamas | Prof. Dayanand Bhargav | 550 |
| 28. | Applied Philosophy of Anekant | Dr. Samani Shashi Prajna | 150 |
| 29. | Environmental Ethics and Its Relevance : An Analytical Study | Dr. Pooja Sharma | 225 |
| 30. | Rethinking Translation | Ed. Sanjay Goyal | 150 |
| 31. | Bibliography of Jaina Literature, Vol.- I | Dr. Samani Agam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya Dr. Vandana Mehta | 1200 |
| 32. | Bibliography of Jaina Literature, Vol.- II | Dr. Samani Agam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya Dr. Vandana Mehta | 1200 |
| 33. | Jainism: An Existential Humanistic Perspective | Dr. Samani Agam Prajna | 300 |
| 34. | Science Perspectives of Jainism | Prof. Samani Chaitanya Prajna, Prof. Narendra Bhandari Prof. Narayan Lal Kachhara | 2000 |
| 35. | Anekanta: Philosophy and Practice | Prof. Anil Dhar | 250 |
| 36. | Contribution of Acarya Mahaprajna to Indian Culture | Prof. (Dr) Dayanand Bhargava | 500 |
| 37. | Various Dimensions of Social Culture | Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan Dr. Hemlata Joshi | 350 |
| 38. | Corporate Sector and Value Orientation | Dr. Jugal Kishor Dadhich | 170 |
| 39. | Jain View of Reality: <br> A Hermeneutic Interpretation | Dr. Samani Rohini Prajna | 695 |
| 40. | Jainism: A Living Realism (Monograph) | Prof. S.R. Vyas | 125 |
| 41. | Jain Theory of Knowledge (Monograph) | Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha | 150 |
| 42. | Jain Theory of Aparigraha (Monograph) | Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma | 150 |


[^0]:    *Prof. Arun K Mookerjee, Director, Centre for Comparative Religion, National Council of Education, Bengal

[^1]:    *Prof. Jagat Ram Bhattacharyya, Professor, Department of Sanskrit, Pali \& Prakrit, Bhasabhavana, Visva-Bharati University, Santiniketan - 731235 (W.B)

[^2]:    *Dr. Samani Shashi Prajñā, Associate Prof. Deptt.of Jainology \& Comparative Religion \& Philosophy, Jain Vishva Bharati Institute, Rajasthan.Ladnun-341306

[^3]:    * साध्वी निवेदिता (गरिमा जैन), शोधकर्त्री, धर्म अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला
    ** डॉ प्रद्युम्न शाह सिंह, अध्यक्ष, जैन बौद्ध दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005 (उ氛प्र㲵)

[^4]:    *डॉ. शाम गणपत तिखे, सहायक प्राध्यापक, योग एवं आयुर्वेद विभाग, साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, बारला, रायसेन (म.प्र.)
    **जयराम कुशवाहा, एम. फिल. (शोधार्थी), योग एवं आयुर्वेद विभाग, साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय. बारला. रायसेन (म.प्र.)

[^5]:    * डॉ सुशिम दुबे,कार्यक्रम अधिकारी, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार), नई दिल्ली-110062

[^6]:    *Late N.L. Jain, Jain Kendra, Rewa (M.P)

